www.researchvidyapith.com ISSN (Online): 3048-7331

Research Vidyapith International Multidisciplinary Journal

(International Open Access, Peer-reviewed & Refereed Journal)

(Multidisciplinary, Monthly, Multilanguage)

* Vol-2* *Issue-6* *June 2025*

पृथ्वी की दर्दनाद चीखें: अन्तिम विनाश का संकेत

विपुल तिवारी

छात्र, प्राचीन भारतीय इतिहास एवं पुरातत्व विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ, उ0 प्र0

सारांश

यह लेख पृथ्वी की पर्यावरणीय, भौतिक और नैतिक पीड़ा को दर्शाते हुए हमें यह बताता है कि जलवायु परिवर्तन, प्राकृतिक आपदाएँ, जैव विविधता का ह्रास और वैज्ञानिक चेतावनियाँ कृ सब एक सामूहिक चेतावनी हैं। इसमें न केवल संकट का वर्णन है, बल्कि उसके लिए जिम्मेदार मानव भूमिका और समाधान की संभावनाएँ भी प्रस्तुत की गई हैं। लेख भारत की सांस्कृतिक चेतना, सह–अस्तित्व के विचार और युवाओं की भूमिका को रेखांकित करते हुए एक हरित भविष्य की आशा जगाता है। अंत में, यह हमें याद दिलाता है कि पृथ्वी की दर्दनाद चीखें केवल विनाश का संकेत नहीं, बल्कि जागरण का अवसर हैं।

भूमिका– कराहती धरती की पुकार

कभी स्वर्ग जैसी सुंदर इस धरती पर आज एक भयावह सन्नाटा गूंज रहा है। नदियों की लहरें अब मीठे संगीत की बजाय रसायनों से भरी हिचकियाँ बन चुकी हैं। आकाश का नीला रंग धुएँ और कार्बन के बादलों से ढँक गया है। जंगलों की हरीतिमा राख में बदलती जा रही है, और प्राणी मात्र एक अदृश्य भय के साए में साँस ले रहे हैं। हमारी पृथ्वी चीख रही है। यह चीख केवल प्राकृतिक आपदाओं की गूंज नहीं है, बल्कि मानव की उन गल्तियों का परिणाम है जो उसने अज्ञानता, लोभ और आत्ममुग्धता में दोहराईं। पृथ्वी की दर्दनाद चीखें– अन्तिम विनाश का संकेत एक मात्र विषय नहीं, बल्कि मानवता के सामने खड़ा एक कठोर दर्पण है। इस लेख का उद्देश्य केवल तथ्यों को उजागर करना नहीं है, बल्कि हमें चेतावनी देना है कि अब समय बहुत कम है। अगर अब भी हम नहीं चेते, तो विनाश केवल सैद्धांतिक नहीं, भौतिक और मानवीय यथार्थ बन जाएगा।

औद्योगिक क्रांतिरू जहाँ से विनाश की कहानी शुरू हुई

18वीं शताब्दी में जब औद्योगिक क्रांति आई, तो मानव ने शक्ति, यंत्र, और ऊर्जा का ऐसा सम्मोहन पाया कि उसने प्रकृति को केवल एक संसाधन मानना शुरू कर दिया। कोयला, तेल, गैस कृ सब दोहन का साधन बन गए। नदियाँ बाँधी जाने लगीं, पर्वत काटे जाने लगे और जंगल साफ किए जाने लगे। इस क्रांति ने मानव को भौतिक सुखों की भरमार दी, पर प्रकृति को गहराई से घायल कर दिया। कारखानों से निकलता धुआँ, नालियों में बहते रसायन, और मशीनों से निकले शोर ने धरती को कराहने पर मजबूर कर दिया। 21वीं सदी का मानव सबसे शिक्षित, सबसे तकनीकी, सबसे जागरूक प्राणी है। उसके पास चाँद तक पहुँचने की क्षमता है, लेकिन अपने पैरों के नीचे की जमीन की पीड़ा को सुनने की संवेदना नहीं। वह उपभोक्तावाद के जाल में ऐसा उलझा है कि उसे प्रकृति केवल "प्रोडक्ट" और "सर्विस" जैसी दिखाई देती है। ष्एसीष् के ठंडक के पीछे ग्लोबल वार्मिंग है। 'कार' की स्पीड के पीछे ईंधन की लूट है। फूड डिलीवरी के पीछे प्लास्टिक का पहाड़ है। इस अंधी दौड़ में मानव ने यह तक नहीं सोचा कि यदि धरती ही नहीं रहेगी, तो इन सारी सुविधाओं का क्या मूल्य?

पृथ्वी की चेतावनियाँरू अनदेखी की परंपरा

धरती बार–बार चेतावनी देती रही, 1984 में भोपाल गैस त्रासदी एक संकेत थी। 2004 की सुनामी एक स्पष्ट चीख थी। 2020 का कोरोना महामारी भी प्रकृति की प्रतिशोधात्मक गूंज थी। पर हमने हर बार उसे "दुर्घटना", "संयोग" या "प्राकृतिक घटना" कहकर टाल दिया। धरती की चीखें किसी एक कोने या एक आवाज़ तक सीमित नहीं हैं। वे बहुआयामी हैं, पाँच मुख्य रूपों में सामने आती हैं; जलवायु परिवर्तन, वनों की कटाई, जल संकट, प्रदूषण, और जैव विविधता का

क्षरण। इनका संबंध केवल पारिस्थितिकी से नहीं, बल्कि सीधे–सीधे मानव जीवन की प्रत्येक इकाई से है।

1. जलवायु परिवर्तन– जलवायु परिवर्तन पृथ्वी का सबसे बड़ा संकट है। यह न केवल तापमान बढ़ा रहा है, बल्कि पृथ्वी के समस्त मौसम चक्रों को असंतुलित कर रहा है।

प्रभाव– ग्लोबल वार्मिंग– औद्योगिक क्रांति के बाद से पृथ्वी का तापमान औसतन 1.2 डिग्री सेल्सियस बढ़ चुका है। पिघलते ग्लेशियर–आर्कटिक में बर्फ की मोटाई हर दशक में लगभग 13% कम हो रही है। समुद्र स्तर वृद्धिरू IPCC रिपोर्ट कहती है कि 2100 तक समुद्र स्तर 1 मीटर तक बढ़ सकता है कृ जिससे मुंबई, कोलकाता, ढाका जैसे तटीय शहर डूब सकते हैं, जिससे दुनिया के 800 मिलियन लोग विस्थापित हो सकते हैं। । भीषण आपदाएँ– चक्रवात, बाढ़, लू और सूखे की आवृत्ति और तीव्रता में तेज़ी से वृद्धि।

विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) के अनुसार– 2030–2050 के बीच केवल जलवायु परिवर्तन के कारण 25 लाख अतिरिक्त मृत्यु प्रतिवर्ष हो सकती हैं। सबसे अधिक प्रभावित होंगे कृ बच्चे, बुजुर्ग, और गरीब समुदाय। जलजनित रोग, फेफड़ों की बीमारी, कुपोषण और तनावजनित मानसिक रोगों में विस्फोट।

वैज्ञानिक तथ्य–

संकेतक	स्थिति (2024 तक)
CO2	420 ppm के आसपास
औसत तापमान वृद्धि	+1.2°C
ग्लेशियर हानि	हर वर्ष 267 बिलियन टन बर्फ पिघल रही
समुद्र का अम्लीकरण	30% अधिक तेज

2. वनों की कटाई– प्रकृति के फेफड़ों की सर्जरी–पेड़ न केवल जीवनदायी ऑक्सीजन देते हैं, बल्कि वर्षा चक्र, मिट्टी की गुणवत्ता और जैव विविधता के संतुलन को बनाए रखते हैं। लेकिन सच्चाई क्या है? हर 1 सेकंड में एक फुटबॉल मैदान जितना जंगल काटा जा रहा है। केवल अमेज़न वर्षावन में पिछले दशक में 20% क्षेत्र साफ हो चुका है। भारत में 1970–2020 के बीच लगभग 30% वन्य क्षेत्र घटा।

प्रभाव– भूमि क्षरण और बाढ़ की अधिकता। वन्यजीवों के आवास का विनाश। स्थानीय जलवायु में असंतुलन।

3. जल संकट– रोती नदियाँ, सूखते जीवन–जल जीवन है यह कहावत अब शोकगीत बन चुकी है।

स्थितिरू विश्व बैंक के अनुसार, 2030 तक 40% जल की कमी की संभावना है। भारत की 70% नदियाँ गंभीर रूप से प्रदूषित हैं, गंगा और यमुना तक जहरीली हो चुकी हैं। भूजल का स्तर 10–15 मीटर प्रतिवर्ष तक गिर रहा है कृ विशेषकर उत्तर भारत में।

प्रमुख कारण– अनियंत्रित बोरवेल और अंधाधुंध दोहन। शहरीकरण के कारण जलग्रहण क्षेत्र नष्ट। रासायनिक खेती से भूमिगत जल में विष। जल अब जीवन नहीं, बल्कि 'संघर्ष' बन चुका है।

4. प्रदूषणः अदृश्य ज़हर, प्रत्यक्ष विनाश

• **वायु प्रदूषण**– WHO के अनुसार, वायु प्रदूषण से प्रतिवर्ष 70 लाख लोगों की समयपूर्व मृत्यु होती है। दिल्ली, लाहौर, बीजिंग जैसे शहरों में वायु गुणवत्ता सूचकांक (AQI) 400–500 तक जा पहुँचा है, जो "अत्यंत ख़तरनाक" श्रेणी में है। बच्चों और बुजुर्गों में दमा, कैंसर और दिल की बीमारियाँ बढ़ीं।

• **प्लास्टिक प्रदूषण**– हर वर्ष 30 करोड़ टन प्लास्टिक बनता है, जिसका 90% ठीक से रिसायकल नहीं होता। समुद्रों में लगभग 50 ट्रिलियन प्लास्टिक के टुकड़े बह रहे हैं। मछलियों, पक्षियों और जलजीवों की आंतों में प्लास्टिक पाया जा रहा है, जो अंततः मानव शरीर में प्रवेश करता है।

• **भूमि और रसायन**– कीटनाशकों और रासायनिक खादों ने मिट्टी की उर्वरता को बंजर ज़मीन में बदल दिया है। हर वर्ष 240 करोड़ टन उपजाऊ मिट्टी का क्षरण हो रहा है। प्रदूषण कोई धीमी मौत नहीं, बल्कि "धीमा नरसंहार" है। 2050 तक कृषि उत्पादन में 20–25% की गिरावट आने की आशंका है।

FAO (Food and Agriculture Organization) की 2023 रिपोर्ट में– 30% ज़मीन अब कृषि योग्य नहीं रही कृ मिट्टी में जैविक पदार्थ 50% घट गए हैं। 800 मिलियन लोग अभी भूखे हैं, और यह संख्या 2050 तक 2 बिलियन हो सकती है। सूखा, बाढ़ और मिट्टी क्षरण के कारण कृषि आधारित अर्थव्यवस्था वाले देशों का भविष्य सबसे अधिक खतरे में है।

5. जैव विविधता का ह्रास– पृथ्वी की आत्मा का क्षय–जैव विविधता, यानि सभी प्रजातियों की विविधता, पृथ्वी के पारिस्थितिक तंत्र का मूल स्तंभ है। किंतु

स्थिति– हर दिन लगभग 150 प्रजातियाँ विलुप्त हो रही हैं। IUCN रेड लिस्ट में 40,000 से अधिक प्रजातियाँ विलुप्ति की कगार पर हैं। भारत में बाघ, गिद्ध, गंगेटिक डॉल्फिन, हाथी, सभी संकटग्रस्त हैं।

परिणाम– परागण करने वाले कीट जैसे मधुमक्खियाँ 50% घट रही हैं– जिससे कृषि पर सीधा असर। खाद्य श्रृंखला का संतुलन टूट रहा है। पारिस्थितिकी तंत्र की प्राकृतिक पुनर्योजना धीमी या असंभव हो रही। जब विविधता समाप्त होती है, तो पृथ्वी की आत्मा मरती है।ॅथ की यह रिपोर्ट प्रत्येक दो वर्ष में आती है और पृथ्वी की जैव विविधता की स्थिति बताती है। 1970–2020 के बीच वन्यजीव आबादी में 69% की गिरावट। उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों (ट्रॉपिक्स) में 94% तक प्रजातियाँ समाप्त हो

6. "टिपिंग पॉइंट" और "पॉइंट ऑफ नो रिटर्न"– यह वह स्थिति होती है जहाँ पारिस्थितिक तंत्र इतना क्षतिग्रस्त हो जाता है कि वह स्वतः पुनर्योजन की क्षमता खो देता है। उदाहरणरू ग्रीनलैंड आइस शील्ड यदि पूरी तरह पिघलती है, तो उसका पुनः निर्माण असंभव होगा। अमेज़न वर्षावन यदि 25% और घटा, तो वह जंगल नहीं, घास का मैदान बन जाएगा। प्च्ब् का आकलन है कि 2030द्2040 तक हम इस सीमा को पार कर सकते हैं।

कुछ भविष्यवाणियाँ– यदि अब भी हम न चेते

क्षेत्र	संभावित संकट (2050 तक)
समुद्री क्षेत्र	90% प्रवाह भित्तिचित्र नष्ट
कृषि	25% उत्पादन हानि,वैश्विक भुखमरी
जनसंख्या	1-2 अरब लोग पर्यावरण विस्थापन के शिकार
स्वास्थ्य	महामारी,जलजनित रोगों का विस्फोट
अर्थव्यवस्था	वैश्विक GDP में 7-10% गिरावट

अब क्या विकल्प हैं?– परिवर्तन की पाँच राहें

निम्नलिखित पाँच क्षेत्रों में यदि निर्णायक कार्य किए जाएं, तो हम विनाश की गति को धीमा या उलट सकते हैं।

1. ऊर्जा संक्रमण: Net Zero Carbon Emission की ओर लक्ष्य रखें (भारत ने 2070 का लक्ष्य तय किया है)। हर घर, हर गली को नवीकरणीय ऊर्जा से जोड़ने की ज़रूरत है।
2. सतत कृषि रूरासायनिक खाद और कीटनाशकों की जगह जैविक कृषि, ज़ीरो बजट खेती को बढ़ावा दें। जलग्रहण क्षेत्र और पारंपरिक सिंचाई तकनीकों का पुनरुद्धार।
3. हरित शहरीकरण और वन पुनर्निर्माणरू नगरों में ग्रीन बेल्ट, शहरी वन, वर्षा जल संचयन को अनिवार्य बनाएं। प्रत्येक निर्माण के साथ 10 पेड़ लगाने की अनिवार्यता। "एक व्यक्ति = एक वृक्ष" अभियान को राष्ट्रीय आंदोलन बनाना होगा।
4. उपभोग में संयमरू अनावश्यक खरीदारी, विलासिता और फेंक संस्कृति का त्याग करें। "कम उपयोग करो, पुनः उपयोग करो, रिसायकल करो" (Reduce, Reuse, Recycle) को जीवन मंत्र बनाएं।
5. पर्यावरण शिक्षा और जागरूकतारू स्कूल से लेकर विश्वविद्यालय तक पर्यावरण चेतना अनिवार्य होनी चाहिए।

मीडिया, सोशल मीडिया और सिनेमा में पर्यावरण आधारित नैतिकता का प्रचार हो। स्थानीय समुदायों, विशेषकर महिलाओं और युवाओं को पर्यावरण के रक्षक के रूप में प्रशिक्षित किया जाए।

भारत की भूमिका– चुनौती भी, अवसर भी

भारत एक जनसंख्या महाशक्ति है– जिसका अर्थ है कि यदि भारत बदलेगा, तो दुनिया बदलेगी।

'सौर ऊर्जा में अग्रणी बनना (Solar Alliance जैसी पहल को तेज़ी से लागू करना)।'गंगा और अन्य नदियों के संरक्षण को वैज्ञानिक और सांस्कृतिक दोनों स्तरों पर एकजुट करना।

'जलवायु न्याय के लिए वैश्विक मंच पर स्पष्ट नेतृत्व देना– विकसित देशों से जवाबदेही मांगना।

देश	पहल	परिणाम
कोस्टा रिका	100% नवीकरणीय ऊर्जा	कार्बन न्यूट्रल
भूटान	"ग्रॉस नेशनल हैप्पीनेस" नीत	कार्बन नेगेटिव देश
भारत	इंटरनेशनल सोलर अलायंस	वैश्विक नेतृत्व

अंतिम शब्द– चेतावनी नहीं, निमंत्रण–"तुम्हारे विकास से मुझे शिकायत नहीं– पर मुझे छोड़कर मत बढ़ो।"

"मैंने तुम्हें जन्म दिया है कृ अब तुम मुझे पुनर्जीवित करो।"

समापन श्लोक (संस्कृत से)

"पृथ्वी शान्तिः, आपः शान्तिः, वनस्पतयः शान्तिः"– यजुर्वेद

(पृथ्वी में शांति हो, जल में शांति हो, वृक्षों में शांति हो)

निष्कर्ष–

पृथ्वी की चीखें केवल ध्वनि नहीं, एक चेतावनी हैं कृ एक पुकार, जो मानवता से करुणा, उत्तरदायित्व और परिवर्तन की मांग करती है। हम जिस विनाशकारी राह पर बढ़ रहे हैं, वह केवल प्रकृति के लिए नहीं, स्वयं मानव अस्तित्व के लिए संकट है। लेकिन अभी भी समय है कृ यदि हम अपनी चेतना को बदलें, विकास की दिशा को पुनर्परिभाषित करें और पृथ्वी को माँ मानकर उसकी रक्षा करें, तो यह संकट अवसर में बदल सकता है। यह नष्ट होने का अंत नहीं, नवसर्जन का प्रारंभ हो सकता है– बशर्ते हम सुनने लगें, समझने लगें और कार्य करने लगें।

Author's Declaration:

The views and contents expressed in this research article are solely those of the author(s). The publisher, editors, and reviewers shall not be held responsible for any errors, ethical misconduct, copyright infringement, defamation, or any legal consequences arising from the content. All legal and moral responsibilities lie solely with the author(s).

संदर्भ–ग्रंथ सूची

1. Intergovernmental Panel on Climate Change IPCC, 2023, Climate Change 2023: Synthesis Report- Contribution of Working Groups I, II and III to the SiÛth Assessment Report of the IPCC- https:www-ipcc-ch.report.ar6@syr
2. United Nations Environment Programme UNEP, 2022, Emissions Gap Report 2022: The Closing Window Climate crisis calls for rapid transformation of societies- https:www-unep-org.resourcesemissions&gap&report&2022
3. World Wildlife Fund WWF, 2022, Living Planet Report 2022: Building a nature&positive society- https:www-wwf.org
4. Food and Agriculture Organization FAO, 2023, The State of the World's Biodiversity for Food and Agriculture. Rome. https:www.fao.org
5. World Health Organization, WHO, 2022, COP27 Special Report: Health, Climate and Equity- https:www.who.int.
6. National Aeronautics and Space Administration, NASA, 2024, Global Climate Change: Vital Signs of the Planet, Retrieved from https:climate.nasa.gov
7. Ministry of Environment] Forest and Climate Change MoEF&CC, Government of India. 2023, India State of Forest Report 2023. https:forestsurveyofindia.gov.in
8. Mishra] A-] & Rai] S, 2024, Climate Vulnerability and Adaptation Strategies in India- Springer Nature- ISBN: 978-981-19
9. Thunberg] G- ¼2019½- No One Is Too Small to Make a Difference- Penguin Books-
10. Shukla, P. R. & Pant, M, Eds. 2021, Climate Change and India: Vulnerability Assessment and Adaptation 2nd ed. World Scientific.
11. NITI Aayog, 2023, India's Emerging Water Crisis: A Call for Sustainable Solutions- Government of India.
12. Mondal, J. & Basu, R. 2024, Air Pollution and Public Health in Indian Cities- Oxford University PresMondal.
13. Roy, P, & Sen. D, 2023, Sustainable Urban Development in South Asia, Routledge.
14. Gupta, L, & Singh, A, 2024, Plastic Pollution and Marine Biodiversity, Cambridge University Press-
15. National Geographic Society, 2022, Planet Possible: Understanding the Climate Crisis, National Geographic Partners.
16. IEA, International Energy Agency, 2023, World Energy Outlook 2023: Transitioning to Net Zero.

17. Climate Action Tracker, 2024, Country Summaries: India, China, USA, EU, https:climateactiontracker-org.
18. Bhushan, C, & Joshi, V- 2023, Renewable Energy Transition in India, Academic Press.
19. Das, R, & Chatterjee, M- 2024, Water Management Policies in India: A Critical Review, Springer Publications-
20. Kelkar, R, & Kulkarni, S, 2022, Biodiversity Conservation and Indigenous Knowledge, Indian Institute of Science Press.
21. Gupta, K, 2024, Forest Restoration and Reforestation Strategies in South Asia, Elsevier.
22. Singh, P., & Mehta, V, 2023, Climate Education in Indian Curricula: Challenges and Opportunities- Sage Publications.

Cite this Article-

'विपुल तिवारी', 'पृथ्वी की दर्दनाद चीखें: अन्तिम विनाश का संकेत', Research Vidyapith International Multidisciplinary Journal (RVIMJ), ISSN: 3048-7331 (Online), Volume:2, Issue:06, June 2025.

Journal URL- https://www.researchvidyapith.com/
DOI- 10.70650/rvimj.2025v2i60008
Published Date- 06 June 2025